www.thearyasamaj.org

वर्ष-१३ अंक-६
२७ फरवरी २०१७

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

सामवेद

अथर्ववेद

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

www.thearyasamaj.org

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१३ अंक-६

२७ फरवरी २०१७
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३११५
विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	प्रजातंत्र में पनपता	4
2.	जिज्ञासा एवं समाधान	6
3.	कामयाबी का रहस्य	8
4.	व्यक्तित्व विकास	9
5.	जिंदगी	12
6.	क्या करें संध्या में मन नहीं लगता	13
7.	महर्षि की अद्भुत समरण शक्ति	16
8.	होली	17
9.	स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारूप	18
10.	क्यों है आदमी परेशान	20
11.	आत्म साधना की अलौकिक यात्रा है मौन	23
12.	कथा के माध्यम से सनातन धर्म का	25

मार्च माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

■ पं. लेखराम जयंती	1
■ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	8
■ बसंतोत्सव, होलिका उत्सव, नवशस्येष्ठी पर्व	13
■ विश्व उपभोक्ता दिवस	15
■ रानी अवंतीबाई लोधी बलिदान दिवस	20
■ विश्व वानिकी दिवस	21
■ विश्व जल दिवस	22
■ भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू शहीद दिवस	23
■ चैत प्रतिपदा, गुड़ी पड़वा, सृष्टि उत्पत्ति दिवस,	
■ नव संवत्सर २०७४ विक्रम संवत् प्रारंभ,	29
■ गुरू अंगददेव पुण्यतिथि	31

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय :

प्रजातन्त्र में पनपता.....

प्रजातन्त्र का सीधा–सीधा अर्थ वह कार्य जो आम जनता का और आम जनता के द्वारा लिए गए निर्णय के आधार पर होता हो, वही प्रजातन्त्र है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समानता का अधिकार है अपने विचारों की अभिव्यक्ति और विधि अन्तर्गत कार्य करने की स्वतन्त्रता हैं विचारों की स्वतन्त्रता हो। यह प्रजातन्त्र की मूल भावना है।

आज विश्व में भारत अपना एक अलग स्थान है, जिसे पूर्ण रूप से प्रजातन्त्र का स्वरूप देकर गणराज्य के रूप में मान्यता प्राप्त है। किन्तु प्रजातन्त्र के मुखौटे में हो कुछ और ही रहा है। देश की सत्ता जातिवाद, पूंजीवाद और परिवारवाद के आधार पर फल फूल रही है। स्पष्ट रूप से आज देश की स्थिति जिसमें स्वार्थ प्रधान है, प्रजातन्त्र की भावना के अनुरूप नहीं है, उसका समीकरण जाति, सम्प्रदाय और पूंजी बनकर रह गया है। निश्चित रूप से इस धारणा ने प्रजातन्त्र की मूल भावना की हत्या कर दी है। मानसिक अभिव्यक्ति किसी न किसी प्रभाव से प्रतिबंधित हो रही है। जिस गणराज्य की कल्पना करके गणराज्य की कल्पना की थी आज उस संविधान की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है। चंन्द लोगों की यह योजना देश की बहुसंख्या पर प्रभावी हो रही है और उसका परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ रहा है।

क्षेत्रिय पार्टियां जिनका अस्तित्व मूल रूप से जाति या सम्प्रदाय है, वहां अनेक स्थानों पर जाति या सम्प्रदाय का ही एक गढ़ बन चुका है, जिसमें नेत त्व करने वाले उसी जाति या सम्प्रदाय के ही हो सकते हैं क्योंकि संख्या के आधार पर उन्होने वहां अपना एकाधिकार अर्जित कर लिया है। जनमत उनका अपना है अथवा उनके व्यक्ति इतने प्रभावशील हैं कि उनसे हटकर दूसरी जाति या सम्प्रदाय के लोगों को भी प्रभावित कर लेते हैं। इस प्रकार आज प्रजातन्त्र को चारों और से जातिवाद, सम्प्रदाय वाद, पूंजीवाद ने घेर रखा है, जो नारा तो प्रजातन्त्र का देते हैं किन्तु प्रजातन्त्र के नाम पर वे अपने अपने तन्त्र विकसित करने में लगे हैं।

जब तक देश का नागरिक अनेक तन्त्र वादों से मुक्त नहीं होगा, इस मानसिक गुलामी को नहीं त्यागेगा तब तक इस देश में प्रजातन्त्र है, ऐसा कहना मात्र औपचारिकता और धोखा ही है। यह प्रजातन्त्र की मूल भावना और संविधान का खुला उपहास है। यदि अभी भी इस देश का नागरिक प्रजातन्त्र के सही अर्थ को नहीं समझा तो उसका जीवन 1947 के पहले की परतन्त्रता के समान ही रहेगा यह भी निश्चित है। देश की व्यवस्था व्यवस्थित हो, निष्पक्ष हो, प्रगतिशील और बुद्धिजीवी, राष्ट्रवादी विचारधारा वाले लोगों के हाथ में हो तभी देश समृद्धशाली

www.thearyasamaj.org

हो सकता है, तभी यहां का नागरिक पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता का अनुभव कर सकता है। यह तब होगा जब नागरिक देश को सुव्यस्थित करने के लिए अपने बहुमूल्य अधिकार जो मत (वोट) के रूप में उसे प्राप्त है उसका सदुपयोग करेगा। उसके मन में मतदान करते समय यह विचार रहना आवश्यक होगा कि जिसे मैं इस देश या प्रान्त का प्रतिनिधित्व सौंपने का अधिकार देने जा रहा हूं वह व्यक्ति वास्तव में प्रान्त या देश के लिए हितकर होगा।

मतदान करते समय जाति और सम्प्रदाय अथवा किसी भय, लालच से उठकर आत्मा की आवाज पर देश को सामने रखकर मतदान करना आवश्यक है। वे बुद्धिजीवी तथाकथित वर्ग जिसके पास एक साधारण व्यक्ति से सोचने समझने और समझाने की शक्ति अधिक है उसका तो और भी अधिक नैतिक दायित्व बन जाता है। वे अपने व्यक्तिगत कार्यों के अतिरिक्त इस विचारधारा को निरन्तर प्रवाहित करे, देश की राजनीति से नही राष्ट्रनीति से जुड़कर अच्छे व्यक्तियों का चयन हो इसका प्रयास करें। दुर्भाग्य है कि अपने विचारों की स्वतन्त्रता का और अपने मताधिकार का इन सब बातों पर विशेष ध्यान न देकर एक साधारण भाव से उपयोग हो रहा है। यह आंख मिचकर चलने जैसा है जिसमें कभी सौभाग्य से सही मार्ग भी मिल सकता है किन्तु ठोकर खाने, गड्ढे में गिरने की दुःखद संभावना ज्यादा होती है। आज देश इस भावना में जी रहा है। वह यह जानते हुए भी कि प्रजातन्त्र का यह नारा थोथा हो गया है कुछ लोगों के इशारों पर यह देश चल रहा है। जहां स्वार्थ में बड़े से बड़ी बुराईयां भी किसी को नजर नहीं आती हैं, ऐसे देश का प्रजातन्त्र कितना सफल है, गणराज्य शब्द कितना सफल होगा इस पर एक प्रश्न चिन्ह है।

जब तक प्रत्येक व्यक्ति का चिन्तन राष्ट्र के प्रति नहीं होगा, तब तक न उसके लिए राष्ट्र है, न उसका राष्ट्र है, न उसके द्वारा राष्ट्र है।

औपचारिकताओं के लुभावने नारों में जीना वैसा ही है जैसे नकली कागज के फूल जिसमें बाहर से सुन्दरता तो है, न खुशबु ना कोई गुण।

देश में यह दोहरी नीति आज की ज्वलन्त समस्या बन चुकी है। प्रजातन्त्र की आड़ में वह सबकुछ हो रहा है जो इसकी भावना के विपरीत है किन्तु विडम्बना है देश की प्रजा मौन है, इस ओर से उसका ध्यान नहीं है। यह सबकुछ ठीक नहीं है, पुनः एक सभावना को निमन्त्रण है।

"सफलता का पहला रहस्य है, आत्मविश्वास"

– चाणक्य

www.thearyasamaj.org

जिज्ञासा एवं समाधान

– आचार्य ज्ञानेश्वार्य, रोजड

प्रश्न 475 : ध्यान करने से होने वाले कोई पांच लाभ बताईये ?

उत्तर : ध्यान करने से – (1) ईश्वरीय गुण जैसे – ज्ञान, बल, उत्साह, आनन्द, दया, प्रेम, धैर्य, सहनशीलता, निर्भयता, ओज, तेज, आदि की प्राप्ति होती है। (2) कुसंस्कार नष्ट होकर अच्छे संस्कार बनते हैं व उत्पन्न होते हैं। (3) मन इन्द्रियों पर नियन्त्रण होता है। एकाग्रता, स्मृति, बुद्धि बढ़ती है। (4) ईश्वर का साक्षात्कार होता है। (5) लौकिक सांसारिक कार्यों में सफलता मिलती है।

प्रश्न 476 : निराकार ईश्वर का ध्यान कैसे हो सकता है ?

उत्तर : निराकार वस्तु का निराकार रूप में उसके अन्य गुणों के माध्यम से ध्यान किया जाता है। ईश्वर में रूप, रंग का गुण नहीं है, वह सर्वव्यापक है, चेतन है, सृष्टिकर्ता है, आनन्द स्वरूप है, अनन्त ज्ञान व बल से युक्त है, निर्भीक है, न्यायकारी है आदि का चिंतन करना ईश्वर का ध्यान कहलाएगा।

प्रश्न 477 : क्या ध्यान करने से रोग दूर होते हैं ?

उत्तर : हॉ। ध्यान करने से मानसिक रोग में लाभ होता है। रक्तचाप, हृदय रोग आदि में लाभ होता है। एक सीमा तक शारीरिक पीड़ा भी दूर हो जाती है।

प्रश्न 478 : क्या ध्यान न करने वाले को पाप लगता है ? ईश्वर की ओर से कोई दण्ड मिलता है ?

उत्तर : हॉ, ध्यान न करने वाले को पाप लगता है तथा ईश्वर की ओर से दण्ड भी मिलता है।

प्रश्न 479 : क्या ध्यान करने वाला अपने व दूसरे व्यक्तियों के भविष्य की बातों को जान सकता है ?

उत्तर : नहीं। ध्यान करने वाला अपने व दूसरे व्यक्तियों के भविष्य की बातों को पूर्ण रूप में नहीं जान सकता है।

प्रश्न 480 : ईश्वर को न मानने वाले व्यक्ति को भी क्या ध्यान करने से लाभ होता है?

उत्तर : नहीं। ध्यान करने वाले को ईश्वर के प्रति निष्ठा, रूचि, विश्वास होना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रश्न 481 : क्या धन, सम्पत्ति, वैभव, साधन, सुविधा से रहित या कम स्थिति वाला ही ध्यान कर सकता है ?

उत्तर : ऐसा नहीं है। ईश्वर में श्रद्धा, विश्वास रखने वाले सभी व्यक्ति ध्यान कर सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

प्रश्न 482 : क्या धरती पर आसन लगाकर बैठने से ही ध्यान होता है, कुर्सी पर बैठकर या बिस्तर पर लेटकर ध्यान नहीं किया जा सकता ?

उत्तर : धरती पर आसन लगाकर बैठने से अपेक्षाकृत ध्यान अधिक अच्छा होता है, किन्तु किसी कारणवश, कुर्सी पर बैठकर या बिस्तर पर लेटकर भी ध्यान किया जा सकता है।

प्रश्न 483 : क्या ध्यान घर से बाहर जंगल, पर्वत, नदी, खेत, मैदान में ही हो सकता है, घर में नहीं ?

उत्तर : ऐसा नहीं है, घर में भी ध्यान कर सकते हैं। किन्तु शान्त–एकान्त, स्वच्छ स्थान में अधिक एकाग्रता होती है, ध्यान शीघ्र लगता है।

प्रश्न 484 : क्या ध्यान करने से कोई रोग भी हो सकता है ?

उत्तर : ध्यान करने से कोई रोग नहीं होता है।

प्रश्न 485 : ध्यान के समय मस्तक में क्या किसी बिन्दु, सूर्य, चन्द्र, दीपक की लौ आदि वस्तु को आधार बनाना चाहिए ?

उत्तर : नहीं, ये सब क्रियाएं एकाग्रता के लिए प्रारंभिक काल में कुछ समय के लिए कर सकते हैं।

प्रश्न 486 : क्या चुपचाप बैठे रहना, किसी भी विचार को मन में नहीं आने देने का नाम ध्यान है ?

उत्तर : चुपचाप बैठे रहना, किसी भी विचार के मन में नहीं आने देने का नाम ध्यान नहीं है। ध्यान में ईश्वर विषयक विचार बने रहते है।

प्रश्न 487 : ध्यान तो वृद्ध व्यक्तियों को करना चाहिए, युवा अवस्था में इसकी क्या आवश्यकता है ?

उत्तर : ध्यान तो बाल्यकाल से ही करना चाहिए। युवा अवस्था में पर्याप्त बल, स्मृति आदि होने के कारण ध्यान का अधिक लाभ मिलता है। युवा अवस्था से ही ध्यान करने वाला समाधि की अवस्था अच्छी प्रकार प्राप्त कर सकता है। वृद्धावस्था में ध्यान करने वाला रोग, निर्बलता आदि के कारण अच्छी प्रकार ध्यान का सम्पादन नहीं कर पाता है। युवा अवस्था में ध्यान करने वाले की आयु बढ़ती है, स्वास्थ्य अच्छा रहता है, आध्यात्मिक कुसंस्कारों को मार पाता है। सांसारिक उन्नति होती है, जीवन सुख–शान्ति से युक्त बनता है।

प्रश्न 488 : आजकल अनेक प्रकार की ध्यान पद्धतियां प्रचलित हैं, क्या वे सारी पद्धतियां ठीक हैं ?

उत्तर : नहीं, केवल वेदानुकूल पद्धति ही ठीक है।

क्रमशः.....

www.thearyasamaj.org

बोधकथा –

कामयाबी का रहस्य

कहते हैं चाह रखने वाले को राह मिल जाती है, बशर्त चाह सच्ची हो।

यदि आप बहुत बड़ी कामयाबी (उपलब्धि) प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको हल्की फुल्की सामान्य सी इच्छा नहीं बल्कि एक तीव्र इच्छा रखनी होगी। तीव्र इच्छा होने पर व्यक्ति उसके अनुरूप मार्ग ढूँढ़ लेता है। अत्यन्त तीव्र इच्छा बड़ी कामयाबी का प्रारंभिक केन्द्र बिन्दु होता है।

जिस तरह हवा के हल्के–हल्के झोंके प्रकृति को अधिक नुकसान नहीं पहुंचा सकते, उसी तरह कमजोर इच्छा शक्ति इसको बड़े परिणाम नहीं दे सकती।

सदियों पुरानी बात है। एक नगर में एक सन्त रहता था। उस सन्त की ख्याति चारों ओर फैली थी। एक दिन सन्त के पास एक नौजवान युवक आया और पूछने लगा कि – हे महान पुरूष आखिर सफलता प्राप्ति का रहस्य क्या है ? वह सन्त कुछ देर तक विचार करता रहा फिर उस युवक को दूसरे दिन सुबह समीप की नदी के किनारे मिलने को कहा। दूसरे दिन ठीक समय पर वह नौजवान युवक नदी के किनारे पहुंचा। थोड़ी देर बात वह सन्त भी वहॉ आ गये। उन्होंने उस युवक को नदी के मध्य की ओर चलने को कहा। जब पानी उन दोनों की गर्दन तक पहुंच गया, तब उस सन्त ने अचानक उस युवक का सिर पकड़कर पानी में डुबो दिया। युवक पानी से बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगा। परन्तु उस सन्त ने उसे बाहर नहीं आने दिया। उस सन्त ने उस नौजवान युवक को बहुत शक्ति से पानी में डुबोये रखा। कुछ देर छटपटाने के बाद युवक ने पूरी शक्ति लगाकर सन्त को पीछे झटक दिया और अपना सिर पानी से बाहर निकाल दिया।

सिर पानी से बाहर निकलते ही उस नौजवान युवक ने सबसे पहले हवा में एक गहरी सांस ली।

सन्त ने उस नौजवान युवक से पूछा – जब तुम पानी के अन्दर थे तो तुम्हें किस चीज की जरूरत सबसे ज्यादा हो रही थी ?

युवक ने जवाब दिया – हवा की ! जिससे मेरा जीवन बच सके।

सन्त ने कहा – हे युवक ! यही सफलता का रहस्य है। जब भी तुम्हें सफलता हासिल करने की वैसी ही तीव्र इच्छा होगी, जैसी की पानी के अन्दर तुम्हें अपना जीवन बचाने के लिए हवा के लिए हो रही थी, तब तुम स्वयं ही अपनी सारी शक्तियॉ केन्द्रित कर कार्य करोगे, तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

www.thearyasamaj.org

व्यक्तित्व विकास

धैर्य :

धैर्य की परीक्षा विपत्तिकाल में ही होती है। प्रबल झंझावात में हलके–फुलके पदार्थ सुगमता से उड़ जाते हैं। जिनकी जड़ें मजबूत होती हैं ऐसे वृक्ष और सुदृढ़ आधार वाले निर्माण ही मुकाबला कर पाते हैं। नाविक के धैर्य की परीक्षा उस समय होती है जब धारा प्रतिकूल बह रही हो। परीक्षा की भट्टी में तपकर पीतल काला और सोना कुन्दन बन जाता है। संसार में तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। तृतीय श्रेणी के वे व्यक्ति हैं जो संकटों से घबराकर किसी अच्छे कार्य को प्रारंभ ही नहीं करते। द्वितीय श्रेणी में वे लोग हैं जो कार्य को प्रारंभ तो कर देते हैं परन्तु जरा सी भी विपत्ति आने पर उसे बीच में ही छोड़ देते हैं प्रथम श्रेणी में उनकी गणना होती है जो सभी संकटों का धैर्य से सामना करते हुये कार्य को पूरा करके ही दम लेते हैं। जब धैर्य हिम्मत हारने लगे तब निम्न उपाय करें –

1. **आशा** – 'नर हो न निराश करो मन को' व्यक्तित्व को हल्का प्रदर्शन करने वाले कारकों में निराशा का मुख्य स्थान है। समुद्र में जहाज के टूट जाने पर अच्छा नाविक येन–केन–प्रकारेण तैरने का उपाय ही करता है और अधिकतर संकट से पार हो जाता है। यदि वह हाथ पैर मारना छोड़ दे तो बहुत शीघ्र ही उसका जीवन कथावशेष ही रह जायेगा।

आशावान व्यक्ति सदैव शुभचिन्तन और कार्य की सफलता के ही स्वप्न देखता है। उसका उत्साह उसे निरन्तर आगे बढ़ने की ओर प्रेरित करता रहता है। माली इसीलिये वृक्षों को सींचता है कि मुझे एवं मेरी सन्तान को भविष्य में स्वादु फल मिलेगें। माता–पिता वृद्धावस्था जन्म दुःखों से सुरक्षित रहने के लिये ही बच्चों का पालन–पोषण करते हैं। कृषक खेतों में बीजों का वपन इसीलिये करते हैं कि एक दाने के बदले में सैकड़ों दानों की प्राप्ति होगी। आशा पर ही सांसारिक व्यवहार चलते हैं।

2. **आत्मविश्वास** – विश्वास ऐसी शक्ति है जो उसे वस्तु को देख लेता है जो हमारे अन्तस्तल में छिपी हुई है और जिसका हमें ज्ञान ही नहीं होता। परमात्मा ने प्रत्येक व्यक्ति को यह सामर्थ्य दिया है कि वह अपनी प्रसुप्त क्षमताओं को पहचान कर आगे बढ़े।

आत्म विश्वास उसका मार्ग दर्शन करेगा और आने वाली बाधाओं से भी विचलित नहीं होने देगा। आत्मविश्वास के बल पर हिलेरी और तेनजिंग एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने में सफल हुये और पेयरी ने उत्तरी ध्रुव की यात्रा की। राइट

www.thearyasamaj.org

बन्धुओं ने वायुयान को आकाश में उड़ाया। मेडम क्यूरी एवं उसके पति ने रेडियम को प्राप्त करने के लिये घर का फर्नीचर भी अग्नि में स्वाहा कर दिया। ऐसे अनेक व्यक्ति हुये हैं जिन्होंने आश्चर्यजनक कार्य आत्मविश्वास के दम पर किये हैं। वेद कहता है – **पृथक् पायन् प्रथमा देवहूतयो अकृण्वत श्रवस्यांसि विदुष्टरः।** दिव्य विभूति एवं प्रबल आत्मविश्वास वाले व्यक्ति सबसे पृथक चलकर ऐसे कार्यों को कर गुजरते हैं जिन्हें सुनकर लोग दॉतों तले अंगुलियां दबा लें।

3. **सकारात्मक चिन्तन** – 'संशयात्मा विनश्यति' जो व्यक्ति पग–पग पर सन्देह करता है और प्रत्येक कार्य में नकारात्मक चिन्तन करता है उसे जीवन में सफलता कभी नहीं मिलती। उत्साह वह संजीवनी बूटी है जो मुर्दादिलों को भी जिन्दा कर देती है। निराशा के भाव व्यक्ति की क्षमता पर कुठाराघात कर देते हैं। भलाई इसी में है कि अपने दुर्भाग्य का रोना छोड़ नवीन उत्साह से कार्य की सफलता का चिन्तन करें। अहर्निश अपने ध्येय की प्राप्ति का स्वप्न देखने का स्वभाव बनायें और एक दिन सफलता आपके कदम चूम लेगी।

4. **प्रसन्नता** – प्रसन्नता में चुम्बकीय आकर्षण रहता है जो लोगों को बरबस अपनी ओर खींच लेता है। प्रसन्न मुख वाले के पास हर कोई आना चाहता है और उदास निराश मुख को देख मित्र लोग भी कन्नी काटने लगते हैं। प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति से हर कोई मित्रता करने का इच्छुक रहता है। एक बार हॅस कर देखो, लोग तुम्हें चारों ओर से घेर लेगें। तुम्हारा व्यवसाय चमक उठेगा, असफलता गायब हो जायेगी और जीवन हरा भरा हो जायेगा। परन्तु स्मरण रहे केवल औपचारिकता के लिये प्रसन्नता दिखलाना स्वयं अपने साथ छलावा मात्र है।

5. **पुरूषार्थ** –

पुरूषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है। मन चाहा फल उसने पाया जो आलसी बनकर पड़ा न रहा।

पुरूषार्थी व्यक्ति असम्भव को भी संभव कर दिखाता है। निराशा क्या होती है यह वह जानता ही नहीं। भाग्य भी बिना पुरूषार्थ के फलित नहीं होता। सोये सिंह के मुख में मृग स्वयं चलकर नहीं आ जाते। कायरलोग ही भाग्य भरोसे बैठे रहकर कष्ट उठाते रहते हैं। **'पापो नृषद्वरो जनः।'** आलसी मनुष्य पापी है। हर समय यह चिन्तन करो **"अहमिन्द्रा न पराजिग्ये"** मैं ऐश्वर्यों का स्वामी आत्मा हूं। मैं कभी पराजित नहीं हूंगा। पुरूषार्थ प्रतिकूल भाग्य को भी बदल देता है। पुरूषार्थ से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। बड़े–बड़े बांध, वायुयान, जलयान आदि का निर्माण पुरूषार्थ द्वारा ही हुआ है। इसराईल की बंकर और नाममात्र की वर्षा वाली भूमि को पुरूषार्थ द्वारा आज हरा भरा बना लिया है। तीन चौथाई भाग पहाड़ी होते हुये भी जापान समृ;द्ध देशों की अग्रिम पंक्ति में है। **'पुरूषः पुरूषार्थवान्"** व्यक्ति का पुरूष नाम इसीलिये है कि वह पुरूषार्थ करे। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम में आश्रम शब्द का अर्थ यही है कि व्यक्ति इन चारों आश्रमों में आ+श्रम पूरा पुरूषार्थ करें।

www.thearyasamaj.org

क्रियात्मक अभ्यास

1. स्वभाव किसे कहते हैं ? क्या स्वभाव को बदला जा सकता है ?
2. आत्म सूचना का अभिप्राय क्या है और इसका प्रयोग कहाँ किया जाना चाहिये?
3. क्रोध को नियन्त्रित करने से कौन से लाभ प्राप्त होते हैं ?
4. भय से रक्षा किस प्रकार की जा सकती है ?
5. आत्मविश्वास द्वारा आपने किन कार्यों में सफलता प्राप्त की है ?
6. क्या आपके जीवन में कभी ऐसा अवसर आया है जब संकटों से घिरे होने पर भी आपने धैर्य से उसका सामना किया हो ?
7. आपके व्यक्तित्व में दूसरों को प्रभावित करने वाले कौन से गुण हैं ?

क्रमशः.....

महर्षि दयानन्द की जीवनी से –

कहाँ आखिरी मंजिल

जितनी योगविद्या अभी तक सीखी थी और योगियों, महात्माओं का अभी तक लाभ प्राप्त किया था, उनसे भी अधिक योगीजन योग विद्या में निपुण विद्यमान हैं। कोई कहता कि आबू पर्वत पर निवास करते हैं, कोई नर्मदा तट पर कहता है, कोई कहता हिमालय के उत्तरा खण्ड में निवास करते हैं।

दयानन्द एक मंजिल पार करते, तभी दूसरी मंजिल सामने दीखती, फिर तीसरी मंजिल अपनी ओर आकर्षित करती।

स्वामीजी आबू गये, नर्मदा तट का भ्रमण किया और काफी समय तक लगातार रमते रहे। परन्तु मंजिल अति दूर सरकती दिखाई दी, अनन्त की ओर। अन्त में उत्तराखण्ड की ओर स्वामीजी ने अपने कदम बढ़ाए।

स्वामीजी ने सुना था कि हिमालय पर महान तपस्वी सन्यासियों का निवास है। उन्हें खोजने चले गये। परन्तु यात्रा भय और खतरों से युक्त थी और भी परिश्रम साध्य भी। पर दृढ़व्रती स्वामीजी को सुगम दीख पड़ रही थी अतः खतरों की चिन्ता किए बिना बढ़ते हुए हरिद्वार पहुंच गए।

हरि के प्रवेश द्वारा पर कुम्भ का बड़ा भारी मेला लगता था जिसमें लाखों नर–नारी सम्मिलित होते थे। साधुओं के अखाड़ों की गिनती ही नहीं थी। इन असंख्य साधु–सन्तों में कहीं खोजने से साधु महात्मा शायद मिल ही जायें, इसी उत्सुकता से दयानन्द को कुम्भ का मेला आकर्षित कर खींच लाया था।

बड़े–बड़े मठाधीशों के पास धन दौलत थी। ऐश्वर्य था किन्तु सत्य न था, न योग था और न मौक्ष का उपाय था। अतः वह वहां भी दयानन्द को अपने वश में न कर सका।

www.thearyasamaj.org

जिन्दगी

जिन्दगी जीना एक कला है।
जो न समझे उसके लिए बला है।।

जिन्दगी खुशी, सम्मान, स्वर्ग की अनुभूति देती है।
संभलकर न चले तो, जीना मुश्किल भी करती है।।

कोई इसे पाकर अपने को धन्य महसूस करता है।
तो कोई जिन्दगी को, अभिषाप समझता है।।

यहां सबकुछ होने पर जो नहीं पाता।
समय गुजरने पर, वो बार–बार पछताता।।

क्योंकि जिन्दगी है ही पानी जैसी।
जो रंग मिला दो, फिर दिखती वैसी।।

हार से जो हारकर बैठ जाते, वो क्या हार को हरा पाएंगे ?
गिरने से डर गए जो, क्या कभी वे चल पायेगें ?

किसी भी नाकामी में, अपनी कमी को देखो।
फिर से कोशिश कर नाकामी को रोको।।

इसलिए, जिन्दगी जीने का एक दस्तूर है।
इसे जानो, मानो, फिर मंजिल नहीं दूर है।।

इसे काटना नहीं, सजाना आना चाहिए।
निराश के नहीं, उत्साह गीत गाना चाहिए।।

ये तो अनमोल वरदान है, कई जन्मों की कमाई है।
न समझे मोल तो, जिन्दगी यूं ही गंवाई है।।

इसलिए हर पल, हर क्षण, उत्साह, उमंग में बीते।
चलते इस राह पर जो, वे ही सही जिन्दगी जीते।।

– प्रकाश आर्य, महू

www.thearyasamaj.org

क्या करें, संध्या में मन नहीं लगता !

धर्मप्रेमी सज्जनों, जब कभी ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) की चर्चा होती है अथवा हमारे सम्मुख कोई ईश्वर भक्ति की बात करता है या फिर हम स्वयं भी किसी उपदेशक विद्वान आदि के उपदेश को सुनकर प्रभु भक्ति के लिए उद्यत होते हैं। जब सत्संग आदि के द्वारा हमारे अन्दर श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है, भावुकता भी होती है और फिर हम संध्या करना प्रारंभ कर देते हैं। किन्तु कुछ दिन के बाद ही हमारी श्रद्धा तथा सत्संग का प्रभाव क्षीण हो जाता है। हमारे अभ्यास का क्रम भी टूट जाता है। अब केवल एक ही बात हम दोहराते रहते हैं, "क्या करें, संध्या में मन नहीं लगता"

जरा विचार कीजिये, **सोचिये कि मन लगता नहीं या हम लगाते नहीं?** मन जड़ है और साधन के रूप में जीवात्मा को प्राप्त हुआ है। आप जैसे चाहे वैसे साधन का उपयोग कर सकते हैं। हॉ, इतना अवश्य है कि दो स्थितियों में आप साधन का उपयोग नहीं कर पायेगें। 1. एक तो यह कि आपको पता ही नहीं है इस वस्तु का क्या उपयोग है ? और कैसे प्रयोग किया जावें ? तो आप प्राप्त वस्तु से कोई लाभ नहीं ले सकते। जैसे आप कैंची को लेकर कपड़े पर चलाने लगे और थोड़ी देर बाद कहें कि यह कैंची कपड़ा क्यों नहीं सिल रही है, इसने तो कपड़े को काट डाला। देखिए, इसमें कैंची का दोष नहीं प्रयोग करने वाले का दोष है। उसी तरह मन का दोष नहीं, कर्ता का दोष है, जब दिन–रात, ईर्ष्या, क्रोध, लड़ाई झगड़े आदि में मन को लगाओगे तो फिर सन्ध्या में कैसे लगेगा ? फिर तो जब आप सन्ध्या में बैठोगे तो लड़ाई झगड़े के दृश्य ही मन दिखायेगा। जो–जो आपने इन्टरनेट से स्मृति में डाउनलोड किया है, वही तो देखने को मिलेगा और वही सुनने को मिलेगा।

2. दूसरा यह कि यदि रोग के कारण व्यक्ति, अशक्त हो जावे, बीमारी इतना जकड़ ले कि निर्बलता के कारण उठना, बैठना ही मुश्किल हो जाये तो भी व्यक्ति साधनों का प्रयोग नहीं कर सकता। आज अधिकांश लोगों की यही स्थिति है। वासना, विषयों के प्रति आसक्ति, दुराचार, अन्याय, स्वार्थ आदि बीमारियों ने मनुष्य को इतना जकड़ लिया है कि बचना कठिन है, जैसे भंवर में फंसे हुए व्यक्ति की स्थिति होती है, चाहकर भी नहीं निकल पाता है। वही स्थिति विषय वासना में आसक्त व्यक्ति की समझो।

जैसे तेज पानी के बहाव में भंवर की ओर डूबने जा रही नाव को एक चतुर नाविक (मल्लाह) अपनी पतवार के द्वारा दिशा मोड़कर डूबने से बचा लेता है। ठीक उसी तरह सद्बुद्धि रूपी पतवार के द्वारा स्वाध्याय, चिन्तन, सन्ध्या (योगाभ्यास, प्राणायाम) सत्संग के माध्यम से अपने जीवन रूपी नाव को वासनाओं के सागर में डूबने से बचा सकते हो।

www.thearyasamaj.org

यदि इन तीनों बातों का ध्यान रखेगें तो, आपका मन सन्ध्या में अवश्य लगेगा। सन्ध्या का प्रथम भाग यह है कि हमारा अपने प्रति क्या कर्तव्य है। अर्थात ईश्वर को सर्वशक्तिमान, अनन्त, सृष्टि का कर्ता, सर्वद्रष्टा जान और मानकर पाप कर्मों से दूर रहना।

हम सोचते हैं कि ईश्वर को बहुत सारे काम हैं, इस विशाल सृष्टि में वह किस–किस का ध्यान रखता होगा अर्थात हमारे पाप कर्मों को भूल जाता होगा। जैसे हम अपने घर में घर के कामों को बार–बार याद करने पर भी भूल जाते हैं किन्तु अथर्ववेद का मन्त्र है **"अस्य संख्याता निमिषो जनानाम्।"** वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी परमेश्वर सबकुछ जानता है। जीवन भर में आपने कितनी बार ऑखें खोली और बन्द की है अर्थात कितनी बार पलकें झपकायी हैं इन सबका भी हिसाब अपने ज्ञान में रखता है। उसकी दृष्टि से बच नहीं सकते, इसीलिए उसकी महान महिमा को जानकर पाप कर्मों से दूर रहो। अपने जीवन को पवित्र बनाओ। जहां पर पवित्रता होती है, वहीं पर शान्ति होती है और जहां शान्ति होगी तो शीघ्र ही एकाग्रता भी हो जायेगी और आपका मन सन्ध्या में लगने लगेगा।

दूसरी बात यह है कि अन्य लोगों के प्रति हमारा व्यवहार कर्तव्य क्या है ? अधिकांश देखा जाता है कि हम सुखी लोगों को देखकर घृणा, द्वेष, ईर्ष्या करते हैं, दूसरों को देखकर जलते रहते हैं जबकि दूसरों पर इस जलन का कोई प्रभाव नहीं होता क्योंकि हम स्वयं ही ईर्ष्या, द्वेष की भट्टी में जलते हैं और जलकर कोयला बन जाते हैं तब सबको काला करते रहते हैं। शास्त्र कहता है **"तमसो मा ज्योतिर्गमय"** अन्धकार में नहीं प्रकाश की ओर चल अर्थात ज्ञान के प्रकाश से स्वयं भी प्रकाशवान होकर दूसरों को प्रकाशित करो। यही जीवन का सार है। सन्ध्या के द्वितीय भाग में बताया है कि हम कैसे इन बुराईयों को दूर करें, कितनी सुन्दर प्रार्थना है, जरा विचार कीजिए, "हे ज्ञान स्वरूप प्रभु। आप ही पूर्व (सामने) पश्चिम उत्तर दक्षिण नीचे ऊपर आदि दिशाओं के स्वामी हैं, आप ही सब ओर से हमारी रक्षा करने वाले हैं, समस्त सांसारिक पदार्थ व दिव्य शक्तियां आपके बाण तुल्य दुर्गुणों (दुष्टों) का नाश और सद्गुणों (श्रेष्ठों) की रक्षा करने वाली हैं हे प्रभो ! हम आपकी सब दिव्य शक्तियों को नमस्कार करते हैं और जो कोई अज्ञानता से हमसे द्वेष घृणा करता है या हम किसी से अज्ञानता के कारण ईर्ष्या, द्वेष करते हैं। हे प्रभो कृपा करके हमारी द्वेष भावनाओं को नष्ट कर दीजिए, इन बुराईयों को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।" इस तरह भाव विभोर होकर आत्म चिन्तन करने से अन्तःकरण पवित्र होता है फिर ईर्ष्या, द्वेष की छाया भी पास नहीं आ सकती। जिसके कारण मन में बैचेनी थी चंचलता मन को टिकने नहीं देती थी, ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) बढ़ जाता था वे सब दोष ऐसे गायब हो जाते हैं जैसे सूर्य उदय होने पर अन्धकार नष्ट हो जाता है। फिर आपका मन सन्ध्या में झट से लग जायेगा। जैसे भूखा बच्चा माता की गोद में पहुंचकर शान्त हो जाता है।

www.thearyasamaj.org

सन्ध्या का तृतीय भाग "उपस्थान" कहलाता है उपस्थान व उपासना शब्द सामन्यतया एक जैसे प्रतीत होते हैं किन्तु धातु अर्थों में अन्तर है "उपासना" शब्द आस उपवेशने धातु से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है समीप बैठना, गोद में बैठना, समीपता प्राप्त कर लेना, इतनी नजदीकता की मैं और मेरे प्रभु के बीच तीसरे किसी की गुंजाइश नहीं, किसी ने ठीक ही कहा –

"जब मैं थी तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी, जामे दो ना समाहिं।।"

दूसरा शब्द है उपस्थान यह शब्द ष्ठा गति निवृत्तौ धातु से सिद्ध है, इसका अर्थ है गति शून्य, चंचलता रहित, एकाग्रता प्राप्त कर लेना, तन्मय हो जाना, आनन्द में मग्न हो जाना, एक बार इस परमानन्द का स्वाद मिल जाये (चश्का लग जाये) तो दुनियां की बड़ी से बड़ी शक्ति, बड़े से बड़ा प्रलोभन भी आपके मन को विचलित नहीं कर सकता। जैसे भूखे को भोजन के बिना कुछ अच्छा नहीं लगता। जैसे नचिकेता को संसार का कोई प्रलोभन नहीं डिगा सका। यह तब होता है जब उपासक ईश्वर के प्रति अपने आपको समर्पित कर देता है फिर उसे सांसारिक सुख तुच्छ प्रतीत होने लगते हैं। "भक्त के सारे भय संकट संशय अभाव कष्ट नष्ट हो जाते हैं। कर्माशय क्षीण हो जाता है, हृदय की गॉठें खुल जाती हैं, उपनिषद के शब्दों में –

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयः।
क्षीयन्ते चास्यकर्माणि तस्मिन् दृष्टे पराऽवरे।।

इन्द्रियां मन के साथ ठहर जाती हैं बुद्धि को जानने के लिए कुछ शेष नहीं रहता, सबकुछ जाना हुआ हो जाता है। प्राप्त करने योग्य सब प्राप्त हो जाता है इसी को उपनिषद के शब्दों में जीवन मुक्तावस्था कहा है। यही जीवन का उद्देश्य है। इस तरह यदि आप आत्मचिन्तन करेगें तो ईश्वर के प्रति प्रेम श्रद्धा उत्पन्न होगे और आपको निश्चित रूप से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। सब सुखी हों, तथा प्रभु भक्त बनकर परमानन्द को प्राप्त करें यही इस लेख को लिखने का अभिप्राय है।

– **पं. सुरेशचन्द्र शास्त्री**
उपदेशक
म. भा. आ. प्र. सभा

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

– आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

महर्षि की जीवनी से .....

महर्षि की अद्भुत स्मरण शक्ति

स्वामी जी की धारणा शक्ति पर गुरू जी अति प्रसन्न थे। परन्तु एक दिन अष्टाध्यायी की कोई प्रयोग सिद्धि कुछ ऐसी क्लिष्ट आई कि स्वामी जी को विस्मृत हो गई। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। अन्त में वे गुरूवर के पास आए, विस्मृत पाठ को पुनः पूछा गुरूवर ने कभी भी दुबारा पाठ नहीं पढ़ाया था। अतः स्वामीजी को झिड़क कर कहा जाओ ! स्मरण करके आओ, हम उसी पाठ को बार–बार पढ़ाने को नहीं बैठे हैं। स्वामीजी ने बहुत स्मरण किया पर पाठ स्मरण न आया। गुरूजी ने भी दुबारा नहीं बताया, और कहा कि हमने एक बार कह दिया। यदि पाठ याद न आए तो यमुना जी में भले ही डूब जाना, पर मेरे पास न आना। तब स्वामी जी प्रण करके सीता घाट पर पाठ का स्मरण करने लगे और इतने एकाग्र हुए कि उन्हें देश काल का भी ज्ञान न रहा। सारी प्रयोग सिद्धि कर सचेत होकर गुरू चरणों में आये और अथ से इति तक प्रयोग सुना दिया। गुरूजी दयानन्द को धारणा व धैर्य को समझकर प्रेम से अति पुलकित हो गये और भूरि–भूरि आशीर्वाद दिया।

एक दिन का दृश्य

एक महिला अपने केशव को लेकर नदी तट पर आई। बच्चे के मृतशरीर को नदी में प्रवाहित कर दिया। साथ ही प्रवाहित करने से पहले शव पर पड़े कफन को उतार लिया और उसे निचोड़कर वापस घर चल दी। उसके पास तन ढकने को दूसरा वस्त्र नहीं था, इसी से उसने बच्चे के उपर से कफन पहनने के लिये उतार लिया था।

इस दृश्य को स्वामीजी देख रहे थे। दयानन्द का हृदय इस दृश्य को देखकर दहल गया। 1857 से पहले देश इसी प्रकार के दौर से गुजर रहा था।

फूट डालो राज करो की नीति पर चलते हुए बन्दर बाट से अंग्रेजों द्वारा देश को साम–दाम–दण्ड–भेद के द्वारा हस्तगत करने की चेष्टा चल रही थी।

दयानन्द के जन्म से पहले जैसी अराजकता थी, उससे देश मिट रहा था।

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

– आर्य समाज का दूसरा नियम

www.thearyasamaj.org

होली

बौझिल चिन्ता से भरी जिन्दगी,
जिन्दगी खा रही है।
देखते ही देखते,
दुःखों के समन्दर में समा रही।।

दिखता हर शख्स,
गम के रंगों में रंगा हुआ।
दीपमाला में जैसे,
दीपक हो बुझा हुआ।

पर होली के रंगों के कुछ छींटें,
जब गिर जाते हैं,
तो वे कुछ क्षणों में ही,
घाव पर मरहम लगा जाते हैं।।

मिल जाते है अपनों से, देकर खुशियाली।
लगता है पतझड़ में, आ गई हो जैसे हरियाली।।

गिले–शिकवे दूर कर बिछड़े मिल जाते हैं।
जब ऐसे मिलन के त्यौहार मनाते हैं।।

आप वर्षों–वर्षों ऐसी संध्या मनाते रहे।
हंसी खुशी के क्षण जीवन में आते रहे।।

सुख के रंगों में रंगा हो, जीवन का हर पल।
सुकून देता रहे जिन्दगी में, हर आने वाला कल।।

– प्रकाश आर्य, महू

www.thearyasamaj.org

पुनः स्मरण –

स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारूप

प्रान्तीय सभा द्वारा ज्ञानवर्धक एक श्रेष्ठ योजना

मान्यवर,

आर्य समाज की मान्यता का आधार वेदादि शास्त्र हैं, आर्य समाज के सिद्धान्त पूर्णतः इन्हीं आर्ष ग्रंथों पर आधारित हैं। यह भी पूर्ण सत्य एवं सर्वमान्य है कि वेद और वैदिक साहित्य समाज में उपलब्ध समस्त विचारधाराओं से श्रेष्ठ व सत्य पर आधारित हैं।

महर्षि दयानन्द रचित ग्रंथों के पठन–पाठन में लेशमात्र भी वैदिक विचारधारा से हटकर कुछ नहीं है। जब तक इन ग्रंथों का आर्यजन स्वाध्याय करते रहे तब तक आर्य समाज की मान्यताओं में स्थायित्व व एक दृढ़ता थी, व्यक्ति समर्पित व पक्के मिशनरी थे। स्वाध्याय की कमी से व्यक्ति व परिवार आर्य विचारधारा के साथ नहीं जुड़ रहे हैं, आज शिथिलता अथवा बिखराव की स्थिति बनते जा रही है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती है कम से कम उनके रचित ग्रंथों की जानकारी और उनका पठन पाठन भी हमारी विचारधारा को तरोताजा बनाए रखता है। महर्षि के अनमोल तर्क संगत विचार पढ़कर दृढ़ता आती है। अपनी विचारधारा में दृढ़ता के लिए यह क्रम आर्यों में निरन्तर चलते रहना चाहिए।

इसी भावना से महर्षि की अनमोल रचना ऋग्वेदभाष्यभूमिका का प्रारंभ स्वाध्याय घर–घर में हो सके, इस हेतु डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, मुम्बई ने इस पुस्तक का क्रमबद्ध स्वाध्याय करने की दृष्टि से एक अत्यन्त प्रसंशनीय कार्य प्रारंभ किया। जिसमें अलग–अलग 10 भागों में प्रतिमाह ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के संबंध में जानकारी प्रेषित की जावेगी। इसका एक और बड़ा लाभ होगा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का स्वाध्याय व संग्रह हमारे परिवारों में हो जावेगा। इसके पष्चात सत्यार्थ प्रकाष, मनुस्मृति, संस्कार विधि, उपनिषद आदि के संबंध में यही क्रम प्रारंभ किया जावेगा।

इसकी उपयोगिता और रूची को देखते हुए **आगे एक माह के स्थान पर 15 दिन में प्रारंभ किया जा सकता है।** प्रतिमाह डाक न मिलने पर फोन से या पत्र से यथाषीघ्र सूचित करे ताकि पुनः व्यवस्था की जावें।

यह जानकारी छोटी सी पुस्तिका के रूप में होगी। इसके पीछे ही कुछ प्रश्न उल्लेखित होगें, जिनका उत्तर इसी पुस्तक में से प्राप्त हो जायेगा। स्वाध्याय का सरल रोचक और आकर्षक तरीका इससे अच्छा नहीं हो सकता है।

इसलिए प्रयास यह होना चाहिए कि यह योजना घर–घर में प्रत्येक सनातन धर्मी के पास एवं कम से कम प्रत्येक आर्य परिवार में पहुंचे। कृपया प्रत्येक आर्य परिवार को इसकी जानकारी देवें।

कृपया शीघ्र ही अपनी स्वीकृति नीचे दिए प्रारूप अनुसार धनराशि सहित निम्न पते पर प्रेषित करें।

स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम

आर्य समाज मन्दिर, महू जिला इन्दौर (म. प्र.) 453441

दूरभाष : 07324–273201, 226566, 9826655117

www.thearyasamaj.org

उद्देश्य

"वैदिक वाङ्मय के प्रतिरूचि जागृत करके उसके स्वाध्याय के लिये प्रेरित करना तथा तदनुकूल आचरण द्वारा मानव जीवन का लक्ष्य एवं कर्तव्य का बोध कराना।"

नियम

1. पाठ्यक्रम का **सत्र प्रत्येक वर्ष के जनवरी से दिसम्बर 1 वर्ष तक** होगा। 1 वर्ष पश्चात दूसरा पाठ्यक्रम प्रारंभ करेगें। अप्रेल या मई में परिणाम और पुरस्कारों की घोषणा तथा अगले पाठ्यक्रम की सूचना।

2. प्रत्येक अंक के अन्त में पांच प्रश्न होगें जिनका उत्तर अलग कागज पर लिखकर नाम व पता लिखकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कैम्प कार्यालय **आर्य समाज, लुनियापुरा, महू** पर प्रतिमाह भेजना होगा।

3. 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के तीन विजेताओं को प्रथम **तीन** पुरस्कार लक्की ड्रा के आधार पर प्रत्येक को **1100/–** का पारितोषिक। 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के **तीन** विजेताओं को प्रत्येक तीन को **501/–** का पारितोषिक। 50 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के **तीन** विजेताओं को प्रत्येक को **251/–** का पारितोषिक दिये जायेगें। 40 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विजेताओं को प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

4. मुद्रण एवं डाक व्यय आदि हेतु पाठ्यक्रम का **वार्षिक शुल्क रू. 150/–** है। यह राशि इस फार्म के साथ भेजना आवश्यक है, यह राशि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कोष में नगद, चैक अथवा खाता क्रमांक 062510001576 देना बैंक, टी. टी. नगर, भोपाल में भेजी जा सकती है। उसकी जानकारी फार्म में भरकर प्रेषित करें।

5. प्रतियोगियों की आयु सीमा 15 से 25 वर्ष तक।

पाठ्यक्रम में भाग लेने हेतु निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार जानकारी देवें।

1. मेरा नाम _____
2. पिता का नाम श्री _____
3. आयु. _____ शैक्षणिक योग्यता _____
4. ग्राम/शहर. _____ तहसील. _____

जिला _____ पिन कोड _____

मोबाईल नम्बर _____ अथवा दूरभाष नं. _____

प्रतियोगिता में राशि 150/– ..... के द्वारा भेजी है।

दिनांक..... **हस्ताक्षर**

www.thearyasamaj.org

क्यों हैं आदमी परेशान!

सुबह से रात्री तक हम अनेक व्यक्तियों से मिलते है, और उससे भी बहुत अधिक संख्या में उन्हें देखते हैं। इस भीड़ में बहुत कम ऐसे मिलेगें जिनके चेहरो पर प्रसन्नता दिखाई दे। अन्यथा प्रायः तनाव, चिन्ता, क्रोध, परेषानी, यही सब चेहरों पर देखने को मिलती है।

ये परेषानियां जीवन का सुख चैन छीन लेती है जीवन उबाऊ हो जाता है वक्त कटते नहीं कटता है कुछ के लिए तो यह अभिशाप भी बन जाती है। परन्तु यह तो जीवन को जीने का सही तरीका नहीं है। क्योंकि जिस जीवन में सुख, शान्ति, उमंग, उत्साह होता है वही अच्छा जीवन कहलाता है।

परेषानी के कारणों में मुख्यतः हमने जीवन के भौतिक मापदण्डों को चुना, अपने लिए इनका अभाव पैसा, परिवार, पद, प्रतिष्ठा, स्वास्थ आदि को माना। इन्ही अभाव को दुःख व परेषानियों का कारण मान दुःख, परेषानी की जड़ समझ रहे हैं। किन्तु ऐसा नहीं है, जिनके पास बहुत धन, सम्पत्ती है जिनके अपने अरबों के व्यापार हैं वे भी दुःखी है, चिन्ताओं से घिरे है, अनिन्द्रा, शकर, हृदय की बिमारियों के प्रकोप से नारकीय जीवन जी रहे हैं, उनके सामने भी पारीवारिक समस्याएं हैं, धन सुरक्षा का भय है, शासकीय विभागों का चक्कर है इस प्रकार न जाने कितनी समस्याओं ने जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रखा है। इसलिए धन दुःखों को हटा देगा, यह सोच ठीक नहीं अपितु अपार असंतुलित धन, अनुचित तरीकों से कमाया धन और परेषानियॉ बढ़ाता है। हमारे मानसिक विचार, सुख–दुःख के आधार हैं।

जिनके परिवार में अच्छी खासी संख्या है भाई बन्धु, पुत्र, पौत्र से भरापुरा परिवार है वे भी दुःखी हैं। जिनके पास प्रतिष्ठा है, पद है, वे भी दुःखी है। जिनका अच्छा स्वास्थ है, बिमारियों से दूर है वे भी परेषान नजर आते हैं। इसलिए इस परेषानी का अन्त मात्र धन, सम्पत्ति पद, पुत्र, पौत्र, परिवार में बसा है यह मानना युक्ति संगत नहीं है।

समझ लेना चाहिए इन परेषानियों का कारण केवल भौतिक अभाव नहीं है तो फिर वे क्या कारण है यह जानना जरूरी है। वैसे तो जिन कारणों से व्यक्ति परेषान रहता है उनकी कोई सीमा नहीं है। किन्तु यह निष्चित मानिए यहां उल्लेखित उन कुछ प्रमुख बातों को अपनाकर भी जीवन की परेषानियों को बहुत कुछ कम कर सकते हैं। आईए कुछ बातों पर विचार करते है।

दिल ही बदौलत रंज भी है,
दिल ही की बदौलत राहत भी।
दुनिया जिसे कहते हैं,
वह जन्नत भी है दोजख भी।।

www.thearyasamaj.org

अधिकांष परेषानियों की जड़ हमारे अपने विचार हैं। ये हमारे विचार ही हमारे कार्यों को गति प्रदान करते हैं। विचारों के अनुसार कार्यों को करना या किसी कारणवष चाहते हुए भी न कर पाना एवं करने के पष्चात भी पर्याप्त वांछित परिणाम न प्राप्त होना परेषानियों को जन्म देता है। इसलिए विचार वही करना चाहिए जो हमारी योग्यता, क्षमता, समय, स्थिति के अनुसार हों। आचार्य यास्काचार्य ने मनुष्य को विचारषील होने का सन्देष देते हुए कहा –

"ये मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति ते मनुष्याः" अर्थात् मनुष्य वे ही जो प्रत्येक कार्य को विचार करके करते हैं। यहां विचार से तात्पर्य यथायोग्य होना चाहिए, उचित होना चाहिए, अपनी क्षमता, योग्यता समयानुकूल होना चाहिए।

विष्व प्रसिद्ध दार्षनिक, अर्थषास्त्री आचार्य चाणक्य ने परेषानियों से बचने का अमृततुल्य सूत्र हमें दिया। इसे ध्यान देकर समझें तो अनेक परेषानियों का कारण हमें इसमें मिल जावेगा। श्लोक इस प्रकार है :–

कः कालः कानि मित्राणि,
को देशः को व्ययागमौ।
कश्चाहं का च में शक्ति,
ऋतु ध्यायन मुहुर मुहुर।।

लोक में पहली बात है कः कालः – समय कौन–सा है, किस व्यक्ति को कौन सा कार्य कब करना, कब किसमें चिन्तन करना इसका ज्ञान नहीं होता, वही परेशान व दुःखी होता है। समय के महत्व, सीमा व मर्यादा को ध्यान में रखकर विचार करना, कार्य करना दुःख परेशानियों को दूर करता है।

कुछ व्यक्ति वर्तमान में नहीं जीते, उनकी सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि जो कल बीत गया और जो कल आने वाला है उसको वे वर्तमान से अधिक महत्व देते हैं।

कल जो बीत गया उसमें जो होना था वह हो चुका, उसके परिणाम को अब हम बदल नहीं सकते, जो नुकसान हो गया उसकी भरपाई नहीं हो सकती, हमारे साथ जो दुर्घटना हो चुकी, जिसका फल हमें भोगना था वह भोग चुके। इन सबको केवल याद करके घटनाओं को ताजा बनाते हैं। इनके अतीत में इतने डूब जाते हैं और इस कारण कि वर्तमान का ध्यान ही नहीं रहता। बीते हुए कल के प्रभाव में जो वर्तमान हमारे हाथ में है उसको नजर अन्दाज करके इसमें जो खुशियॉ ला सकते थे, उसके स्थान पर बीते हुए कल के परिणामों से ही चिन्तित रहते हैं।

www.thearyasamaj.org

इसी प्रकार जो कल आने वाला है उसके प्रति ही आशान्वित रहना, असुरक्षा भाव से उसी ओर पूरा ध्यान देकर उसके बारे में अनुमान की दुनियां में खोकर हम वर्तमान की उपेक्षा करते हैं। इससे वर्तमान की उपलब्धियों को छोड़कर जो प्राप्त है, उसे छोड़कर, आगे आने वाला है जिसकी अभी निश्चितता नहीं है उसे बहुत अधिक महत्व देना भी परेशानियों का कारण है।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम अतीत और भविष्य को बिलकुल अनदेखा कर दे। अतीत सीखने के लिए व भविष्य जीवन योजना के लिए जरूरी है किन्तु हमारे हाथ में जो हैं उसका महत्व कम करके और जो अब हमारे पास नहीं रहा या जो अभी आया नहीं है उसकी चिन्ता या खयाली पुलावों में उलझकर उसे विशेष महत्व देना परेशानियों का कारण है। इसलिए वर्तमान को संभालो, भविष्य स्वतः संभलेगा।

– प्रकाश आर्य, महू

जरा सोचें, संभले और करें।

इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जायें।
इतने गरम मत बनो कि लोग तुम्हें छू भी न सकें।

इतने सरल मत बनो कि लोग तुम्हें मूर्ख बना दें।
इतने जटिल मत बनो कि लोग तुम्हें मिल न सकें।।

इतने गम्भीर मत बनो कि लोग तुमसे ऊब जायें।
इतने छिछले मत बनो कि लोग तुम्हें माने ही नहीं।।

इतने महंगे मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सके।
इतने सस्ते भी मत बनो कि लोग तुम्हें नचाते रहें।।

आपके एक पल का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता है।
आपके एक पल का सत्संग भविष्य बना सकता है।।

सत्य

सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा है, उसे याद नहीं रखना पड़ता।

संकलन – स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

विचार मंथन.....

आत्म साधना की अलौकिक यात्रा है मौन

एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से सम्पर्क का आधार है शब्द। शब्दों की इस अनन्त यात्रा में व्यक्ति–व्यक्ति से जुड़ता भी है और टूटता भी है। पर मौन की यात्रा स्वयं को जानने की यात्रा है, जिसमें केवल आनन्द ही आनन्द है।

प्रायः मौन का अर्थ न बोलना ही समझा जाता है। वास्तव में इसमें हाथ, ऑख व शरीर के अन्य अंगों से किए गए संकेतों का भी निषेध समाविष्ट है। मौन का अर्थ है बाह्य संवाद से पूर्णरूपेण परे होकर अन्तर से नाता जोड़ना। परमात्मा से सम्पर्क साधने का सेतु है मौन। निर्विचार, निर्विकार होकर स्वयं में लीन हो जाने की अलौकिक यात्रा का नाम है मौन। दिव्य शक्तियों को जागृत कर आत्मा के पावन दर्शन करने की प्रबल चेष्टा है मौन। मौन जीवन की बहुत बड़ी शक्ति है। बोलने से मनुष्य की शक्ति का व्यय होता है और मानसिक चिंतन बिखर जाता है। मौन से शक्ति चिंतन में लगी रहती है। मौनावस्था में मनुष्य ईश्वर प्रदत्त शक्तियों को पहचानता है, जिससे ज्ञान और ध्यान को नया आयाम मिलता है। धन से अधिक मूल्यवान है, शब्द शब्दों की कंजूसी मनुष्य को सुखी बनाने में सहायक है, जबकि धन का खर्च जीवन यापन के लिए अनिवार्य है। इसलिए शब्दों का विवेकपूर्ण उपयोग करना बुद्धिमत्ता है।

भाषण की सर्वोत्तम कला –

बोलना एक कला है तो नहीं बोलना अर्थात् मौन रहना भी एक कला है। जिसे बोलना नहीं आता, मौन से उसका यह दोष प्रकट नहीं होता। मौन भाषण की सर्वोत्तम कला है। साधु संतों की पहिचान और विद्वानों की शोभा है मौन। संसार में जो भी महान साधक, तत्व चिंतक, उत्कृष्ट साहित्य सर्जक हुए हैं, उनमें प्रायः सभी ने मौन की साधना की है। बिना मौन के ज्ञान में प्रखरता और वाणी में तेजस्विता नहीं आती है। मौन कर्मरूपी शत्रुओं से लड़ने का श्रेष्ठ शस्त्र है। हम मौन धारण करते हैं, परन्तु मौन का पूरा लाभ नहीं ले पाते, क्योंकि मौन में हम निर्विचार नहीं होते और संकल्प विकल्प युक्त रहते हैं।

सम्यक दर्शन प्राप्ति का मार्ग –

सम्यक दर्शन आत्म–साधना का मूल आधार है, जिसका अर्थ है सत्य और स्वच्छ दृष्टि। मन की ऑख का निर्मल हो जाना और मन से संसार की आकांक्षा का निकल जाना, सम्यक दर्शन प्राप्त करने में मौन सीमेंट का काम करता है। मैं यह यात्रा करता रहता हूं, एक बार आप भी इस अलौकिक यात्रा पर निकल कर देखें तो सही, वाणी से सुगंध आ जाएगी। आकाश सी ऊंचाई और समुद्र सी गहराई आ जाएगी, जिसने भी यह यात्रा की, उसके चरणों में इन्द्र और देवत्व झुका है। शब्द जीवंत हो उठते हैं। देखा मौन की महिमा। हम सोचते रह जाते हैं और इस अलौकिक यात्रा का आनन्द नहीं उठा पाते। मौन आत्मा का स्वभाव है। महावीर ने

www.thearyasamaj.org

बारह वर्ष तक इसी पहचान के लिए मौन साधना की थी। यह साधना वाचाल लोगों को नई दृष्टि देगी। मधुर शब्द जाल के आकर्षण में फंसे मानव को निःशब्द के प्रति आकर्षित करेगी, हर गन्तव्यहीन को सही गन्तव्य का पता देगी, आत्म साधना की इस अनूठी यात्रा को किए बिना हम अन्तर की शान्ति को नहीं पा सकते।

संयम का पाठ –

मौन हमें संयम का पाठ पढ़ाता है। संयम से शक्ति का संचार होता है। जहां शरीर संयम से देह निरोग एवं दीर्घायु होती है, वहीं वाणी संयम हमारी दशा और दिशा ही बदल देता है। हम जीवन जीने की कला सीख कर निर्भय, निराकुल हो शाश्वत सुख को पाने की ओर अग्रसर हो जाते हैं। जीवन अन्तर्मुखी होकर आनन्द की रस धारा प्रवाहित करता है। मौन मन का विश्राम स्थल है और सकारात्मक चिंतन का केन्द्र बिन्दु है। हमारी कार्यक्षमता में गजब की तेजी आती है। सर्व कल्याण, सर्व उत्थान की भावना के भाव प्रबल होते हैं। अतः मौन की यात्रा सभी यात्राओं का संगम स्थल है। जिसने मौन साधना की अलौकिक यात्रा कर ली, उसे अन्य यात्राएं करने की जरूरत नहीं है। इसलिए वाणी को चुम्बकीय शक्ति प्रदान करने के लिए, जीवन को सरल और सरस बनाने के लिए अन्तर में निरन्तर रस की धारा बहाने के लिए, सुख, शान्ति और आनन्द का रसास्वादन करने के लिए, आओ हम अपने वचनरूपी अनमोल रत्नों को व्यर्थ में न लुटा कर मौन की अलौकिक यात्रा को करते रहने का पावन संकल्प लेकर जीवन को सार्थक बनाएं।

म. प्र. प्रदेश में
6 ठा स्थान

आर्य समाज चौमा जिला शाजापुर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द ज्ञान मन्दिर हाई स्कूल चौमा (गुरूकुल) के छात्र **अरूण मालवीय** पिता श्री रामप्रसाद मालवीय जिन्होंने 97.33 प्रतिशत अंक प्राप्त कर माध्यमिक शिक्षा मण्डल की बोर्ड की परिक्षा में कक्षा 10 वीं की सन् 2016 की प्रदेश की प्राथमिकता सूची में 6 ठा स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया है। विद्यालय परिवार इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

www.thearyasamaj.org

कथा के माध्यम से सनातन धर्म का सफलतम प्रचार

आर्य समाज कानड़ के द्वारा नागरिकों के सहयोग से वेद प्रचार की एक समिति बनाई गई जिसमें श्री मोहनलाल आर्य अध्यक्ष और मेरे सहित श्री मनोज, दारासिंह, वीरेन्द्रसिंह, श्री काशीराम अनल, नगर के पत्रकार और व्यापारिओं सहित अनेक व्यक्ति थे।

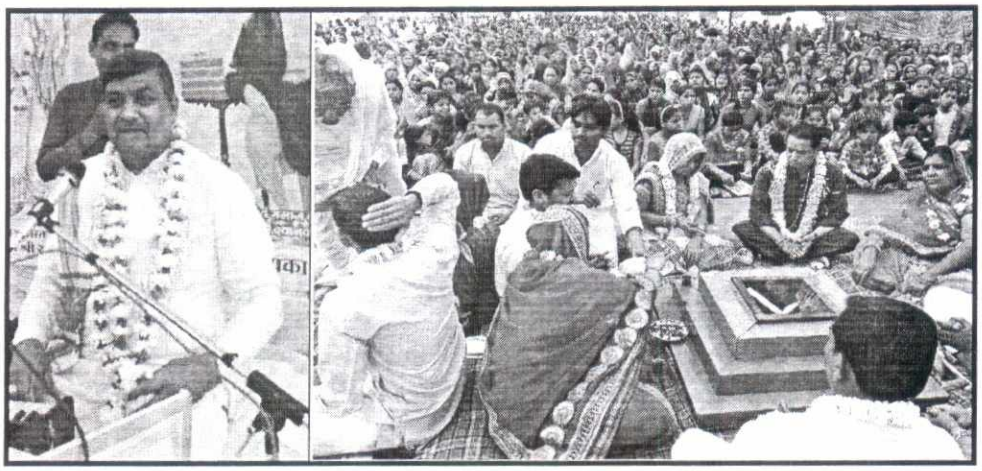

दिनांक 22 से 26 फरवरी को एक वेदकथा का पांच दिवसीय आयोजन किया गया। इसी प्रकार का आयोजन विगत वर्ष भी किया गया था, जिसमें पहले दिन के पश्चात अन्तिम समापन तक उपस्थिति बढ़ती गई और श्रोताओं ने बड़े ध्यान से कथा को सुना। वेद के आधार पर अनेक दृष्टान्त और उससे संबंधित भजन साथ ही रामायण, गीता, महाभारत, चाणक्य नीति, मनुस्मृति, बाल्मिकी रामायण, विदुर नीति इनसे वेद के सिद्धान्तों के अनुसार संबंधित उदाहरण की प्रस्तुति से एक अभूतपूर्व वातावरण बना दिया। इस कथा का प्रभाव जन सामान्य पर इतना अधिक हुआ कि प्रत्येक श्रोताओं को यह कहते सुना गया कि ऐसी कथा कभी नहीं सुनी। कथा में जो जनसमुदाय की उपस्थिति थी वह कल्पना से अधिक थी। हजारों की संख्या में उपस्थिति रहती जिसे सुनने के लिए जो श्रोता आकर बैठता वह 3 घण्टे बाद ही उठता, यह आयोजकों और नगरवासियों के लिए एक अचम्भा था। महिलाओं से श्री शिवसिंह आर्य एवं कार्यकर्ताओं ने पूछा तो उन्होंने कहा कि कथा ऐसी होनी चाहिए, बार–बार करनी चाहिए, हमने तो पहलीबार सुनी।

कथा में विधायक, खादी ग्रामोउद्योग बोर्ड चेयरमेन श्री सुरेश आर्य, नगर पालिका अध्यक्ष, भाजपा एवं कांग्रेस के वरिष्ठ अधिकारी नेतागण, पत्रकार उपस्थित थे। कार्यक्रम में महिलाओं की संख्या 60 से 70 प्रतिशत होती थी।

कथा से प्रभावित नगर के समस्त व्यापारी, पत्रकारों ने 5 दिवसीय कथा के अतिरिक्त रात्रि में एक दिन के लिए अलग से व्याख्यान का निवेदन किया जो 25 तारीख को 8.30 से 10.30 तक हुआ, जिसमें लगभग 550 श्रोता उपस्थित थे।

www.thearyasamaj.org

यह कथा सभामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य के द्वारा की गई जो संगीतमयी तथा उनके स्वयं के द्वारा लिखी गई है, जिसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृति के अतिरिक्त अन्य अनेक ग्रंथों का समय–समय पर उदाहरण और श्लोक प्रस्तुत किए गए।

पिछले साल जिन श्रोताओं ने सुना था वे पहले दिन की कथा में ही हजारों की संख्या में उपस्थित हो गए। कथा की चर्चा सुनकर दूर–दूर से अनेक श्रद्धालु इसमें सम्मिलित हुए।

मेरे सहित क्षेत्र के समस्त आर्य बन्धुओं का विचार है, ऐसी ज्ञानवर्धक कथा से आर्य समाज का और वेद का प्रचार अधिक हो सकता है।

दरबारसिंह आर्य
उपमन्त्री – उज्जैन संभाग

रतलाम संभाग में वेद प्रचार

1. आर्य समाज बूढ़ा जिला मन्दसौर के द्वारा आठ दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ एवं सत्संग का कार्यक्रम दिनांक 13 से 20 दिसम्बर 16 तक ग्राम दोरवाड़ा, टकरावद, बूढ़ा किया गया। जिसमें विद्वान के रूप में पं. शिवदत्त पाण्डे, गुरूकुल सुल्तानपुर उ. प्र. एवं संगीता आर्या भजनोपदेशिका, सहारनपुर उ. प्र. को आमन्त्रित किया गया था।

2. आर्य समाज पीपत्या मण्डी जिला मन्दसौर के द्वारा आठ दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन दिनांक 8 से 15 जनवरी तक आर्य समाज ग्राम नारायणगढ़, कनघटी, काचरिया, खेड़ा खदान, साधाखेड़ा, पीपल्यामण्डी में किया गया।

कार्यक्रम में विद्वान के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द, गुरूकुल पलवल, हरियाणा एवं सुश्री अंजलि आर्या, करनाल हरियाणा से पधारे थे।

उपरोक्त वैदिक धर्म प्रचार के कार्यक्रम में संभाग के उपप्रधान बंशीलाल आर्य ने तन, मन, धन से सहयोग दिया।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

www.thearyasamaj.org

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर

AMIT # 9826